कलीसिया अध्याय 40

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **2 पतरस 1-3 और 1 यहूदा**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (2 पतरस 1-3 और यहूदा) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही माता-पिता]* **(4) इफिसियों 6:4**

दो दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(4) प्रभु में पास लेकर आना। इफिसियों 6:4। और हे पिताओं, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 18**

परिचय दें। **यूहन्ना 18:1-40** को एक साथ बाइबल अध्ययन करने के पाँच प्रकार कदमों के तरीके का इस्तेमाल करें। यूहन्ना 18 अध्याय यीशु मसीह के दु:खों के बारें में बयान करता है। लूका सचित सुसमाचार दिखाता है कि यहूदियों को तीन बार कोशिश की पतरस के द्वारा तीन बार इन्कार किया गया गैर यहूदियों द्वारा तीन बार कोशिश की गई यूहन्ना 18 अध्याय उसके इसे परीक्षणों के इन हिस्सों का वर्णन करता है। पहला यीशु को बंधी बनाया गया, हन्ना के पास कोशिश की गई और पतरस ने पहली बार इन्कार किया फिर कैफा के सामने कोशिश की गई और पतरस ने वहां तीन बार इन्कार किया, आखिर में पिलातुस के सामने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 18:1-40 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

18:4

खोजें 1. **जब यीशु को बन्दी बनाया गया और कोशिश की गई वह पूरे समय पूर्णतः अपनी परिस्थिति पर नियन्त्रित था।**

पद 4 कहता है। तब यीशु, उन सब बातों को जो उस पर आने वाली थी जानकर निकला और उनसे कहा "किसे ढूंढते हो?" कई बातें केन्द्रित करती है कि यीशु अपने परिस्थिति पर पूर्णतः नियन्त्रित थे।

(1) यीशु पहले से जानते थे कि क्या होने वाला है।

जबकि लोग यह नहीं जानते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है यीशु मसीह एकदम सटीक जानते हैं कि उनके साथ क्या होने वाला था।

(2) यीशु जानबूझकर अपने दुश्मनों के पास बाहर आये।

यीशु खतरें से भाग नहीं गये जब तक वह उन्हें मिल नहीं गया वह छिपा नहीं, गतसमनी के पेड़ों के बीच के अन्धेरे में से बहार निकल आया कि अपने दुश्मनों का सामना करे, जब यीशु सीधे उनके सामने खड़ा हो गया, यहूदा ने उसे गले लगाकर चूमा यह कहते हुए "हे रब्बी नमस्कार" (मत्ती 26:49) यह बड़ा ही समझदारी का कार्य था, क्योंकि यहूदा ने सबसे पवित्र रात(फसह) सबसे पवित्र स्थान(ऐसा जहां यीशु ने प्रार्थना की) और सबसे पवित्र (चुम्बन) की अपने स्वामी को धोखा दे। यह एक कार्य भी था क्योंकि यीशु ने खुद पहल की कि वह अपने दुश्मनों के सामने निकलकर आया और स्वयं को उनको हवाले कर दिया!

(3) यीशु को कैद में डालने के लिए उसके विरोध मे कोई ताकत नहीं थी।

बन्धी बनाने वाले यीशु को बन्धी बनाने के लिए फौज को ले गये होगें, सिपाही, पुलिस लोगों की छोटी भीड़ हथियार परन्तु जब यीशु ने स्वयं की पहचान उन पर दी और कहा "मैं यीशु हूँ, जो नासरत से है" उन्होनें अपने आधार को खो दिया और भूमि पर पीछे की तरफ गिर पड़े, उन्होनें आशा नहीं की थी कि यीशु मामले को अपने हाथ में लेकर उनके पास आ जाएगें। उसके देखने के तरीके से उसके राजाओं के राजा का अधिकार झलक रहा था और उसके आवाज के स्वर को सुनकर उनका मन कच्चा हो गया।

(4) यीशु ने अपने साथ किसी भी चेले को बंधी नहीं बनाने दिया।

जब वह यीशु को बन्धी बनाने पर थे तब वह बोले कि वह यीशु को बन्धी बनाने आए हैं। यीशु ने कहा "यदि तुम मुझे ढूँढ़ रहे थे तो इन पुरषों को जाने दो", अपने सबसे बड़े सताव के समय में, यीशु अभी भी "अच्छा चरवाहा था", जो अपनी भेड़ों का ख़्याल रखता है। वह नहीं चाहता था कि उसके चेले पकड़े जाए। क्योंकि यह उनकी विश्वास की परख के लिए बहुत ज्यादा हो जाता, ऐसा करने से, यीशु ने उस भविष्यद्वाणी का किया जो उसने बहुत समय पहले की थी। "कि उसने उन में से एक भी खोने नहीं दिया, जिन्हें परमेश्वर पिता ने उसे दिया था"(यूहन्ना 6:9, 10:28, 7:12)।

(5) यीशु पूर्ण निर्धारित

पतरस, जो यीशु का एक चेला था, हमेशा आवेश पूर्ण था, अपनी तलवार खींच ली और महायाजक के नौकर को मार दी जिसका नाम मालमवस था, और उसके दाहिने कान को कांट दिया, यीशु ने तुरन्त पतरस को रोका और कहा अपनी तलवार रखे उसने कहा "क्या मैं उस प्याले को ना पिऊं जो पिता ने मुझे दिया है?" "प्याले को पीना" यह सबसे अधिक कड़वे सताव में से जाने की अभिव्यक्ति थी, यीशु ने निर्धारित कर लिया था कि वह दु:ख का प्याला पीएंगे और इस की मृत्यु सहेगें यीशु ने निर्धारित कर रखा था कि वह अपनी भेड़ों के लिए स्वेच्छा से अपनी जान देगें। पतरस का तलवार से बचाव उसके दृढ़ निश्चय मे रूकावट थी!

बाद में यीशु ने पिलातुस से कहा "मेरा राज्य इस संसार का नहीं यदि मेरा राज्य इस संसार होता तो मेरे सेवक कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता परन्तु मेरा राज्य यहाँ का नहीं"(यूहन्ना 18:36) यीशु ने इस संसार की सरकार को स्पष्ट कर दिया कि उसकी राज्य राजनैतिक साजिश और फौज की ताकत से नहीं आता। यीशु ने कहा "यदि वह चाहे तो वह स्वर्गदूतों की 12 पलटनों को अपने बचाव में बुला सकते हैं"(मत्ती 26:53) और उसने उन सब लोगों को चिताया जिन्होनें हिंसात्मक जवाब दिया। और उसने उन सब लोगों को चिताया जिन्होनें हिंसात्मक जवाब दिया ''जो तलवार चलाते हैं वे सब तलवार से नष्ट किये जाएगें(मत्ती 26:52)

यीशु मसीह ही केवल पीड़ित लोगों का पीड़ित नहीं था वह राजा था कि जो कुछ पृथ्वी पर हो उस पर पूरा नियन्त्रण रखें। तो सिर्फ *हत्या* नहीं थी परन्तु उसने समझ-बूझकर और स्वेच्छा से बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने जीवन को दे दिया(यूहन्ना 10:17-18)! मैं बहुत ही गहराई से छुआ गया हूं कि यीशु मसीह ने स्वयं को मेरे पापों के बदले स्वेच्छा से दे दिया। और मैं प्रभावित हूँ कि जो कुछ भी मेरे जीवन में होता है उसके ऊपर उसका पूरा नियन्त्रण है।

18:27।

***खोजें 2.* पतरस का इंतजार।**

पतरस वास्तव में स्वयं को नहीं पहचानता था जिस यीशु को क्रूस पर चढ़ाना था। उसने एक बयान दिया उसने यीशु से कहा, 'हे प्रभु मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, वरन मरने के लिए भी तैयार हूँ (लूका 22:33) और "मैं तेरे लिए अपना प्राण भी दे दूंगा" (यूहन्ना 13:37) परन्तु उसी रात, जब यीशु को बन्दी बना लिया गया पतरस यीशु को त्यागकर दूसरें चेलों के साथ चला गया(मरकुस 14:50)!

जब भीड़ यीशु को सभा और महायाजक के पास उससे पूछताछ करने के लिए ले गई, पतरस दूर से उसके पीछे चलते रहा, और महायाजक के आँगन में चला गया। तीन बार लोगों ने उसे यीशु के एक चेले के रूप में उसे पहचाना और तीनों बार पतरस ने यीशु का इन्कार किया की वह उसे नहीं जानता आखरी बार इन्कार

करने के बाद दूसरी बार मुर्गे ने बाँक दिया यीशु ने पीछे मुड़कर सीधे पतरस को देखा। पतरस बाहर गया और बिलक-बिलक कर रोने लगा(लूका 22:61-62)।

पतरस यीशु का इन्कार नही करना चाहता था, परन्तु पतरस यह महसूस नहीं कर पाया की उसके अन्दर भी भय की इच्छाएं हैं। वह इस बात को महसूस नहीं कर पाया कि वह स्वयं से किसी भी वायदे का पूरा नहीं कर सकता, कुछ समय के बाद उसकी कमजोरी और उसके खाली वन के महसूस करण ने उसे यीशु की सामर्थ और पवित्र आत्मा की उपस्थिति का प्राप्त करने राज्य के सम्बन्ध में मेरी कौन-सी आकांक्षाएं हैं? क्या मैं वास्तव मं स्वयं को जानता हूँ? क्या मैं इस बात को महसूस करता हूँ? कि मै कितना कमजोर हूँ इसलिए क्या मैं यीशु का इन्कार कर सकता हूँ इसलिए मैनें उसके अनुग्रह में और पवित्र आत्मा की सामर्थ के लिए मैनें प्रार्थना की कि मैं कभी भी उसका इन्कार ना करूं परन्तु हर समय उसकी गवाही हर परिस्थिति में देता रहूँ(मत्ती 10:32-33)।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये यूहन्ना 18:1-40 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)
चर्चा करें: (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

18:12-24

प्रश्न 1. **कौन से यहूदी अधिकारियों ने यीशु का परीक्षण किया।**

ध्यान दें। स्मरण रखें कि यह चार सुसमाचारों के चारों लेखों की तुलनाद करने से हमें यीशु के साथ परीक्षण, मृत्यु और पुनरुत्थान की घटनाएं स्पष्ट हो जाती हैं।

सैनिक द्वारा बन्दी बनाए जाने के बाद मन्दिर की पुलिस और सभा के अगुवे यीशु अपराधी की तरह बंधे हुए थे। जो इस दुनिया में आजादी लेकर आया, वो बंधा हुआ था ताकि हर एक जो उस पर विश्वास वह पाप के बन्धनों से आजादी प्राप्त करें।

यहूदियों के तीन अधिकारियों ने यीशु का परीक्षण किया रोम के तीन अधिकारियों ने यीशु का परीक्षण किया तीन यहूदी अधिकारीयों के पास जिन्होनें यीशु का परीक्षण किया वह हन्ना, कैफा, और सभा के सामने हुआ था।

(1) हन्ना के समक्ष यीशु की आरम्भिक सुनवाई(यूहन्ना 18:12-14, 19-24)।

जब पतरस महायाजक के आंगन में अपने स्वामी का इन्कार कर रहा था तब यीशु की सुनवाई चल रही थी (यूहन्ना 18:15-18)। हन्ना को "महायाजक" कहा जाता है(यूहन्ना 18:19)। जबकि उसका दामाद काइफ वास्तव में महायाजक था(यूहन्ना 18:13,24)। हन्ना और काइफ ने इस बड़े महायाजकीय प्रार्थना में अलग-अलग दिया में सम्भवत: झूठ बोला जो कई कमरों की इमारत थी जिसके बीच में आंगन था।

यह हन्ना बहुत प्रभावशाली व्यक्ति था, वह स्वयं सन् 6 से 15 तक महायाजक बना रहा, जबकि उसे हठा दिया गया था तो सभा का प्रबल सदस्य बना रहा जो यहूदियों के सारे मामलों को नियन्त्रण करता है। इसने अपने दामाद, काइफ अपने पाँच बेटों की और अपने को भी महायाजक नियुक्त करने का प्रबन्ध किया जबकि वह स्वयं औपचारिक रूप से महायाजक नहीं था तौभी सब उसे महायाजक बोलते थे(लूका 3:2 प्रेरितों के काम 4:6)। चाहे वह सभा को अध्यक्षता नहीं करता था फिर भी कार्य के प्रति एक बहुत ही ज्यादा जिम्मेदार व्यक्ति था। दूसरे इतिहासकार इसे घमण्डी, अत्यधिक महत्व को महावाकांक्षी और अत्यधिक धनी भी बताते हैं। उसका परिवार उनके लालच के लिए बदनाम था। इसकी ज्यादातर धन का स्रोत मन्दिर में बलिदान के लिए बेचे गए जानवरों के मुनाफे के हिस्से से आता था। यही व्यक्ति जिम्मेदार था कि इसने परमेश्वर के प्रार्थना के घर को डाकुओं की खोह में बदल दिया था(यूहन्ना 2:14) यही व्यक्ति यीशु को मारने के षडंयत्र को बनाने में भड़कानेवाला व्यक्ति हो सकता है। वैसे भी उसके दामाद काइफा ने यह प्रचारित किया कि इस्राएल के लिए यही अच्छा है कि यीशु को मार डाला जाए(यूहन्ना 11:49-53)।

हन्ना ने यीशु से पहले उसके चेलों(अनुयायियों) के बारें में पूछा और तब उसकी शिक्षा के बारें में यह यीशु की सफलता के बारें में ज्यादा रूचि रख रहा था वनस्पथ कि सत्य में यीशु ने अपने विरोध में गवाही को इन्कार कर दिया और मांग की कि हन्ना उन इमानदार गवाहों को प्रस्तुत करें जो पुराने नियम में अपेक्षित है। यीशु ने कहा कि उसने हमेशा सबके सामने बातें की और हर एक का स्वागत किया गया कि उसकी शिक्षा को सुने यह बात सभा में एक कठोर विरोध के रूप में खड़ी हुई कि एक गुप्त षडयंत्र रचा जाए, जब यीशु फंस गया तब उससे माँग की कि वह गवाही दे कि उसने क्या गलत किया है(यूहन्ना 18:22-23) पर वह न दें सके।

इस आरंभिक सुनवाई में यहूदी लोग कोई भी अभियोग योग्य प्रमाण प्रस्तुत नहीं कर पाए। पूर्णत: बेकसूर थे। फिर भी हन्ना ने यीशु को आंगन पार करके काइफा के पास भेज दिया।

(2) काइफा और अन्य मुख्य याजकों, प्राचीनों, और सदुकियों के सामने मुकदमा चलाना।

मत्ती 26:57-68 और मरकुस 14:53-65 में मुकदमें का वर्णन किया गया है, और महायाजक के घर में भी चला(लूका 25:54)। यहूदियों के सारे धार्मिक अगुवे सब यीशु के विरोध में झूठें प्रमाणों को ढूँढ़ रहे थे ताकि वह उसे मृत्यु दण्ड दे सके किसी ने भी भिन्न होने की हिम्मत नहीं की! यीशु सभी झूठें आरोप जो उसके विरोध में लगाए जा रहें थे चुप रहा।

तौभी, उसने अपेक्षित मसीहा परमेश्वर के पुत्र होने से इन्कार नहीं किया यीशु ने कहा कि उसकी इस संसार में दूसरे आगमन पर लोग मुझे सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दाहिने हाथ में बैठा देखेगें(मत्ती 26:63-64)। तब यीशु मसीह उन सभी लोगों का न्यायी होगा जो मानव इतिहास में जिए हैं।

महायाजक, काइफा और सभी मुख्य याजकों प्राचीनों और सदूकी की यीशु के विरोध में कोई अभियोग योग्य प्रमाण नहीं खोज पाये, यीशु मसीह पूर्णत: बेकसूर थे, फिर भी उन्होनें उस पर परमेश्वर की निन्दा का आरोप लगाया, उसके मुहँ पर थूका और उसे अपने चंगुल में फंसा लिया यह मुकदमा लगभग सुबह 3 बजे खत्म हो गया होगा, क्योंकि मुर्गा उस समय बांग देने लग गया था, यीशु को महायाजक के घर में सुबह बन्दी बनाकर रखा गया, उस समय के दौरान, सिपाही, जिन्होनें यीशु की पहरेदारी की यीशु का मजाक उड़ाया अपमानित किया, और उसे पीटा(लूका 22:63-65)।

(3) महायाजक की अध्यक्षता के साथ अधिकारिक सभा के सामने मुकदमा चलाना।

मुकदमे का वर्णन लूका 22:66-71 मत्ती 21:1 और (मरकुस 15:1) में है। और जैसे की दिन शुरू हुआ कार्यदारी की (लूका 22:66) यहूदी सभा के परिवार की सभी को जल्दी में बुलाई की वह अपने औपचारिक निर्णय की पुष्टि करें की यीशु मृत्यु दण्ड के योग्य दोषी पाया गया है। वह चाहते थे कि इससे पहले यरूशलेम में लोगों को पता चले कि क्या हो रहा है तब तक सबकुछ खत्म हो जाए इससे पहले कि उस शाम को सब्त आरम्भ हो। वह उस भ्रष्ट न्यायिक कार्यवाही का दिखावा करना चाहते थे जो उन्होने रात्रि के सत्रों में की।

फिर से यीशु मानते हैं कि वह अपेक्षित मसीहा है और वह जल्द ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठेगा और वह परमेश्वर का पुत्र है। "परमेश्वर के पुत्र" का अर्थ है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के मनुष्य का स्वभाव धारण किया और पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच में रहने आ गया(यूहन्ना 1:1,14) यदि परमेश्वर स्वयं को जलती हुई झाड़ी में प्रकट कर सकता है(निर्गमन 3:2-4)। तो वह इस योग्य है कि स्वयं के एक धर्मी मनुष्य में प्रकट करें! नाम "परमेश्वर का पुत्र" का अर्थ है कि यीशु मसीह "अदृश्य परमेश्वर का दृष्य स्वरूप है"(कुलुस्सियों 1:15)। अदृश्य परमेश्वर का दिखाई देने वाला तेज, परन्तु महिमामय गुण और उसकी महिमा का प्रकाश और अदृश्य परमेश्वर के तत्व की छाप है(इब्रानियों 1:3)। परन्तु यहूदियों की अधिकारिक परिषद भी यीशु के विरोध में कोई अभियोग नहीं खोज पाए यीशु पूर्णत: बेकसूर थे! जबकि यहूदी सभा को यह अधिकार था कि वह मृत्यु दण्ड सुना सके परन्तु उनके पास उस मृत्यु दण्ड को निष्पादित करने का अधिकार नहीं था, इसलिए के यीशु को रोमी साम्राज्य के हाकिम पिलातुस के पास ले गए।

18:12-24

प्रश्न 2. **क्यों धार्मिक यहूदी अधिकारियों के सामने कार्यवाही अन्यायपूर्ण थी।**

ध्यान दें। यह धार्मिक यहूदी अधिकारियों के सामने कार्यवाही अन्यायपूर्ण थी। 11:49-50 बताता है कि यहूदियों ने बहुत पहले है ठान रखा था कि यीशु को मार डालना है। यहूदी धार्मिक अगुवे तथ्यों से वंचित थे कि वह यहूदी राष्ट्र के ऊपर से अपनी पकड़ खो रहें थे, वह गुस्सा थे कि यीशु ने उनके बारें में चीजों को उजागर कर दिया है और सार्वजनिक रूप से उनकी निन्दा की। इसलिए, यहूदी धार्मिक अगुवों के सामने की कार्यवाही वास्तविक कार्यवाही नहीं थी, परन्तु कार्यवाही का मजाक। *उन्होने* यीशु के विरोध में षडयंत्र रचा और वह उसे उसी के आगे खींचते गये, *उन्होनें* अपने अधिकारियों को यीशु को बन्दी बनाने के लिए भेज दिया, *वह* गवाहों को लाए, जो सब झूठें गवाह थे *उन्होनें* यीशु की निन्दा की जबकि वह पूर्णत: बेकसूर था,

वह उसे रोगी हाकिम के पास छोड़ आए, *उन्होंने* पूरी भीड़ को उकसाया की वह बरअब्बा को चुने यीशु को क्रूस पर चढ़ाए, *उन्होंने* उसका मजाक बनाया, उसके पुनरुथान के बारें में झूठ फैलाया और प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार *वह* मसीहीयों को निरन्तर सता रहें हैं।

यीशु के समय इन यहूदी धार्मिक अगुवों का डाह और गुस्सा उन्हें यहूदी लोगों को सामान्य रूप से किसी से भी बढकर पापी नहीं बनाता है। याद रखें जब गैर-यहूदी रोमियों ने भी समान अन्यायपूर्ण से कार्यवाही की और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया, और आज दूसरे राष्ट्र भी यीशु का इन्तजार करते हैं और मसीहीयों को सताते हैं। इसीलिए बाइबल बताती है "सबने पाप किया" दोनों ने यहूदी और गैर यहूदीयों ने उनके पापों के लिए उद्धारकर्ता की जरूरत है!

18:28-40

प्रश्न 3. **रोमी अधिकारियों के सामने यीशु की कौन सी कार्यवाही हुई?**

ध्यान दें! यहूदी अधिकारियों द्वारा यीशु को तीन बार कार्यवाही का सामना करने के बाद उसने रोमी अधिकरियों की तीन और कार्यवाहियों के सामना किया, उसके उन तीन कार्यवाहियों में से पिलातुस के सामने पहली कार्यवाही थी हेरोदेस के सामने कार्यवाही और पिलातुस के सामने दूसरी बार कार्यवाही का सामना करना।

(1) पिलातुस के सामने पहली कार्यवाही।

रोमी साम्राज्य पलिस्तीन के ऊपर राज्य करता था और पिलातुस यहूदा में रोमी साम्राज्य की तरफ से हाकिम था। वह घमण्डी व्यक्ति था(यूहन्ना 19:10), निर्दयी था(लूका 13:1), बहमी था (यूहन्ना 19:8), और एक स्वयं-साधक था, जो रोमी साम्राज्य के साथ अपनी अच्छी स्थिति का खोना नहीं था, वह इस बात से बहुत डरा हुआ था कि यहूदी लोग अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके उसे गद्दी से हटा न दे कार्यवाही के दौरान ऐसा लगता है मानों वह सब बिन्दूओं उस दिशा में ले जा रहा हो जहाँ वह स्वयं को इस मुकदमें से छुड़ा सकें।

जब पिलातुस पूछता है कि दोष क्या है? यहूदी अगुवों ने कहा कि पिलातुस के पास यीशु को लाने का सिर्फ यह कारण था क्योंकि वह *अपराधी* था(यूहन्ना 18:30) यह पिलातुस को *अप्रत्यक्ष धमकी* थी कि वह किसी और अन्य निष्कर्ष में न आएं।

जब पिलातुस ने कहा कि यहूदी अपनी व्यवस्था के अनुसार यीशु का न्याय करने की अनुमति है। यहूदी अगुवों ने यह दिखाया कि उन्होनें यीशु को मारने की ठान रखी थी(यूहन्ना 18:31) लूका 23:2 से लगता है जब पिलातुस ने यीशु को व्यवस्था की प्रक्रिया के बिना दण्ड सुनाने से मनाह कर दिया तब यहूदी अगुवों ने यीशु पर यह तीन आरोप लगाए।

- इसने यहूदी राष्ट्र को विकृत(उलट दिया) किया है।
- इसने रोमी साम्राज्य को कर देने के लिए यहूदियों को मना किया है।

- वह राजा होने का दावा करता है।

इस प्रकार उन्होनें यीशु पर *एक खतरनाक राजनैतिक विरोधी* होनी का आरोप लगाया!

जब पिलातुस ने यीशु की निजी तौर पर जांच की यीशु ने उसे विवरण दिया कि वह वास्तव में राजा था परन्तु संसार के राजाओं के समान नहीं वह स्वर्ग से आया है। राष्ट्रों के विरोध में राजनीति के लिए और फौज की सामर्थ्य के लिए लड़ें। वह सत्य की गवाही देने के लिए आधा है और झूठ को नष्ट करें, यीशु ने राज्यपाल, को कोमलता से सत्य की तरफ आने का निमन्त्रण दिया उसने कहा "जो कोई सत्य का है वह मेरा शब्द सुनता है"(यूहन्ना 18:37)।

जब पिलातुस बाहर आया जहां लोग खड़े थे उसने घोषणा की कि यीशु पूर्णत: बेकसूर था। उसने कहा मैं तव उसमे कोई दोष नहीं पाता(यूहन्ना 18:38)! यदि पिलातुस इमानदार न्यायी होता तो वह यीशु को इस बिन्दू पर आजाद करके जाने देता।

परन्तु यहूदी अगुवों ने और ऊपर गलील तक और पूर्ण: यहूदिया तक लोगों ने तुरन्त यीशु पर क्रियाशीलता के साथ यीशु पर निरन्तर आरोप लगाना आरम्भ किया(लूका 23:5)। जबकि पिलातुस के पास पूरे यहूदिया के ऊपर पूर्ण क्षेमाधिकार था, उसने यीशु को हेरोदेस राजा के पास भेज दिया क्योंकि वह चाहता था कि यीशु को कोई और हेरोदेस का क्षेमाधिकार यहूदिया के ऊपर भी था।

(2) हेरोदेस राजा के सामने कार्यवाही।

यह कार्यवाही लूका 23:6-12 में वर्णित है। जबकि हेरोदेस राजा ने यीशु से कई सारे प्रश्न पूछें और यहूदी धार्मिक अगुवे बहुत जोरदार रूप से आरोप लगा रहे थे, यीशु ने एक उत्तर नहीं दिया।

यहां तक की हेरोदेस भी अभियोग का कारण नहीं खोज पाया, तौभी उसने यीशु का मजाक उड़ाया और उसके बाद पिलातुस के पास वापस लौटा दिया।

(3) पिलातुस के सामने दूसरी बार कार्यवाही।

लूका 23:13-25 के अनुसार, पिलातुस ने एक साथ यहूदी अगुवों को बुलाया और उनसे कहा कि उसने यीशु को उसने उनकी उपस्थिति मे परखा है। परन्तु ना तो मैं और ना ही राजा हेरोदेस ने उनके आरोपों के बुनियाद में कुछ पाया है, एक तरफ तो पिलातुस यहूदी अनुयायिओं से डरा हुआ था कि यदि वह यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए दे देगा, दूसरी तरफ यहूदी धार्मिक अगुवों से डरा हुआ था कि वह सारे यहूदी राष्ट्र को भड़का सकते हैं कि वह रोमी अधिकार के विरोध में उठ खड़े हों।

मत्ती 27:15-26 के अनुसार, भीड़ ने पिलातुस से मांग की कि वह फसह के समय पर अपने अनुग्रह को एक कैदी को आजाद करने के द्वारा प्रकट करें। पिलातुस उन्हें यीशु, यहूदियों का राजा और बरअब्बा के बीच में चुनाव करने दो, जो कुख्यात विद्रोही और हत्यारा (यहां तक कि यहूदियों के लिए भी) उसने अपेक्षा की थी कि वह यीशु को चुनेगें, उस महत्वहपूर्ण नाजुक समय में एक सन्देशवाहक ने पिलातुस को उस स्वपन के बारें में सूचित किया जिसके बारें में उसकी पत्नि तीव्र पीड़ा में थी यह उस समय था जब यहूदी

अगुवे पूरी भीड़ को उभार कर मांग की कि वह बरअब्बा को छोड़ दें, और यीशु को क्रूस पर चढ़ा दें। पिलातुस ने अभी भी यह बनाए रखा कि यीशु पूर्णत: बेकसूर है तौभी वह इस बात से घबराया हुआ था कि हो सकता है कि वह राज्यपाल को औदा खो देगा, उसने यीशु को कोड़े लगवाए और क्रूस पर चढ़ाने के लिए उनके हाथ में सौंप दिया।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोच विचार करके यूहन्ना 18 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 18:1-40, लागू करने के सम्भवत: उदाहरण।

18:1. यीशु के समान आप भी प्रार्थना करने के लिए शान्त स्थान चुन सकते हैं।

18:5. यीशु ने कभी झूठ नहीं बोला, उसे कभी भी अपनी वास्तविक पहचान नहीं छिपाई।

18:8-9. यीशु ने कभी भी एक भी जन को नहीं खोया जो परमेश्वर पिता ने उसे दिया है।

18:10. मसीहीयों को कभी भी हथियारों पर आश्रय नहीं रखना चाहिए आतंकवाद या पवित्र युद्ध(जिहाद)।

18:11. मसीहीयों को सताप को स्वीकार करना चहिए जो परमेश्वर की अनुमति से होता है।

18:12. मसीहीयों को बन्दी होने का विरोध नहीं करना चहिए, क्योंकि उन्हें उच्च अधिकारियों को भी गवाही देनी है(मत्ती 10:17-20)।

18:20. यीशु ने संसार में हमेशा खुले तौर पर बातें की और गुप्त में कुछ नहीं कहा उसने लोगों को धार्मिक स्थानों में भी सिखाया जहां वह आमतौर पर मिलते थे।

18:21. यीशु ने अपने आरोप लगाने वालों को चुनौती दी कि वह उनसे पूछें जिन्होनें उसे बोलते हुए सुना है। क्योंकि वह जानते हैं कि उसने क्या कहा है।

18:23. यीशु ने उन्हें भी चुनौती दी जिन्होनें उसे फसाया था कि वह गवाही दे कि गलत क्या है उसने उसका सामना किया जब वह उसे अन्यायी रूप से पीट रहें थे जब उसने सत्य बोला।

18:34. यीशु ने राज्यपाल को भी चुनौती दी कि वह स्वयं यीशु के बारें में क्या विश्वास करता है। ना की साधारणत: वह बोलें जो दूसरे लोग उसके बारें में बोलते है।

18:36. यीशु ने खुले तौर पर कहा कि उसका राज्य इस संसार का नहीं है, वह अपनें आप को बचाने के लिए नहीं लड़ेगा।

18:37. यीशु ने खुले तौर पर कहा कि वह इस राज्य का राजा है और वह उसका राज्य सत्य की घोषणा करते हुए फैलता जाएगा।

18:39-40. मसीहीयों को तैयार रहना चाहिए कि इस संसार में लोग मसीहीयों को मार डालेगें और अपराधियों को जाने देगें।

2. यूहन्ना 18:1-40 से व्यक्तिगत लागू करने के उदाहरण।

मैं अपने बारें में सोच रहा था और स्वयं से प्रश्न पूछा, "पतरस के समान प्रभु से मैनें कौन से वायदे किये हैं?" "कौन-सी आकांक्षाएं मैनें परमेश्वर के राज्य के सम्बन्ध में की थी?" "क्या मैं वास्तव में स्वयं को जानता हूँ?" "क्या मैं यीशु का इन्कार करने का खतरा लेता हूँ?" मैं परमेश्वर से दीन होकर पूछना चाहता हूँ जो परमेश्वर मेरे बारें में सोचता है।

यीशु मसीह की हत्या नहीं की गई थी उसने जानबूझकर और स्वेच्छा से बहुत से प्राणों की छुड़ौती के लिए अपनी जान दी वह राजा है जो कुछ पृथ्वी पर होता है उसके ऊपर उसका हमेशा पूर्ण नियन्त्रण है। क्या मैं वास्तव में इस पर विश्वास करता हूँ? मैं अपनी जागरूकता का अभ्यास करना चाहता हूँ कि मेरे जीवन में वह राज्य करता है और मेरा गंतव्य स्थान निर्धारित करता है। न कि अन्धी किस्मत के द्वारा और न ही कठिन परिस्थितियों द्वारा लेकिन उसे जीवित यीशु मसीह को छोड़ और कोई नहीं।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 18 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।
(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रिया]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

समूह में दो या तीन निरन्तर प्रार्थना करते रहें एक दूसरे के लिए और संसार में लोगों के लिए (रोमियों 15:30, कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।

2. <u>प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।</u> यूहन्ना 18 का अध्ययन दूसरे व्यक्ति के साथ या समूह के लोगों में करें।

3. <u>परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।</u> 1यूहन्ना 1-3 में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. <u>याद करें।</u> नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(5) प्रेम द्वारा अनुशासन, नीतिवचन 13:24,** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

5. <u>प्रार्थना।</u> इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **<u>अपने लेखे का अद्यपन करें।</u>** जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।